भारतीय परम्परा ™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

मासिक साहित्य पत्रिका
वर्ष-५, अंक-४९, अगस्त-२०२५

त्यौहारों का संगम

www.bhartiyaparampara.com

For Private Circulation Only

भारतीय परम्परा ™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-५, अंक-४९, अगस्त-२०२५

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत-२०८२, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-वर्षा

सोम		04 श्रावण शु. दशमी, श्रावण सोमवार व्रत	11 भाद्रपद कृ. द्वितीया, बडी तीज सिंजारा	18 भाद्रपद कृ. दशमी	25 भाद्रपद शु. द्वितीया, वराह जयंती
मंगल		05 श्रावण शु. एकादशी, पुत्रदा एकादशी व्रत	12 भाद्रपद कृ. तृतीया, कजली-सातूडी-बडी तीज व्रत, चौथ व्रत	19 भाद्रपद कृ. एकादशी, अजा एकादशी व्रत	26 भाद्रपद शु. तृतीया,गौरी हब्बा, हरतालिका तीज व्रत, ओणम पर्व आरम्भ
बुध		06 श्रावण शु. द्वादशी	13 भाद्रपद कृ. चतुर्थी, बहुला चौथ	20 भाद्रपद कृ. द्वादशी, बुध प्रदोष व्रत बछ बारस	27 भाद्रपद शु. चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, डांडिया चौथ
गुरू		07 श्रावण शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	14 भाद्रपद कृ. पंचमी-षष्ठी बलराम जंयती, हलछठ, उपछठ	21 भाद्रपद कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्रि, पर्यूषण पर्वारम्भ	28 भाद्रपद शु. पंचमी, संवत्सरी, ऋषि पंचमी, पर्यूषण समाप्त
शुक्र	01 श्रावण शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी	08 श्रावण शु. चतुर्दशी	15 भाद्रपद कृ. सप्तमी, स्वतंत्रता दिवस	22 भाद्रपद कृ. चतुर्दशी	29 भाद्रपद शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी
शनि	02 श्रावण शु. अष्टमी, आदि पेरुक्कू	09 श्रावण शु. पूर्णिमा, रक्षाबंधन, नारली पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	16 भाद्रपद कृ. अष्टमी, कृष्ण जन्माष्टमी	23 भाद्रपद कृ. अमावस्या, पोळा एवं मारबत पर्व	30 भाद्रपद शु. सप्तमी
रवि	03 श्रावण शु. नवमी, मित्रता दिवस	10 भाद्रपद कृ. प्रतिपदा	17 भाद्रपद कृ. नवमी, गोगा नवमी, दही हाण्डी पर्व	24 भाद्रपद शु. प्रतिपदा	31 भाद्रपद शु. अष्टमी, राधा अष्टमी पर्व

कृ.- कृष्ण, शु.- शुक्ल

आदि पेरुक्कू

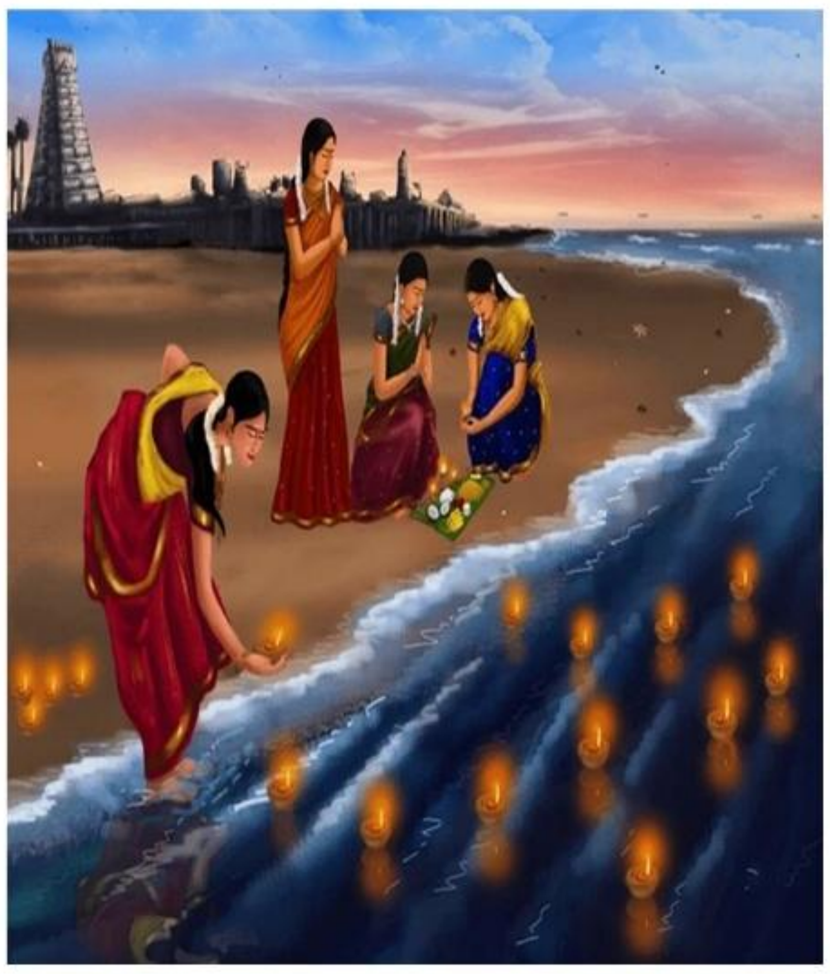

आदि पेरुक्कु पर्व तमिलनाडु का एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो मुख्य रूप से किसानों और जल देवता के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए मनाया जाता है। **यह त्योहार तमिल कैलेंडर के आदि महीने (जुलाई-अगस्त) के 18वें दिन मनाया जाता है। आदि पेरुक्कु को 'पथिनेट्टम पेरुक्कू' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है "अठारहवें दिन का त्योहार"**। इस त्योहार का प्रमुख उद्देश्य किसानों की फसलों के लिए जल संसाधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है।

www.
पूरा पढ़े

मित्रता दिवस

मित्रता दिवस, अगस्त के पहले रविवार को मनाया जाता है। यह दिन दोस्तों के महत्व को याद दिलाता है और उनके साथ मजबूत बंधन बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। इंसान के जीवन में, मित्र का होना जरूरी होता है और इसे जीवन का एक अभिन्न अंग माना जाता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है **श्री कृष्ण और सुदामा की दोस्ती**। मित्रता उन अनमोल रिश्तों में से एक है जो बिना किसी स्वार्थ के हमें भावनात्मक सहारा देती है।

पुत्रदा एकादशी

पुत्रदा एकादशी हिंदू धर्म में एक अत्यंत पावन और फलदायी व्रत है, जो श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना की जाती है और व्रत रखने का विशेष महत्व होता है। इस व्रत को श्रद्धा और नियमपूर्वक करने से **संतान सुख की प्राप्ति होती है, विशेष रूप से उन्हें जो संतान की कामना रखते हैं। 'पुत्रदा' का अर्थ ही है – पुत्र (संतान) प्रदान करने** वाली, अतः यह व्रत दांपत्य जीवन में वंश वृद्धि और खुशहाली के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

भाई-बहन का यह अटूट रिश्ता हम सभी के मन में बसे बचपन की मीठी यादों से जुड़ा है – वो खट्टी-मीठी नोकझोंक, साथ में मस्ती, चोरी-छिपे रात को खाना खाना, भाई का बहन की चोटी खींचना और बहन का माँ से शिकायत करना – "समझा लो अपने लाडले को!" – फिर वो माँ की हल्की-सी चपत और भाई का पापा से कहना – "आप इसे कुछ नहीं कहते, आपका लाड़-प्यार ही इसे बिगाड़ रहा है!" ये सारी बातें आज भी दिलों में ताज़ा हैं, और अगर भूल भी गए हों, तो हमने याद दिला दीं।

यह रिश्ता केवल आज का नहीं, सदियों से चला आ रहा है। रक्षाबंधन का पर्व इस रिश्ते की गहराई, स्नेह और विश्वास का प्रतीक है। आपने भगवान श्रीकृष्ण और द्रौपदी, इन्द्रदेव, लक्ष्मी माता और राजा बलि की कथा, सिकंदर और राजा पुरु, रानी कर्णावती और सम्राट हुमायूं जैसी कई ऐतिहासिक और पौराणिक कथाएँ अवश्य सुनी होंगी। इन सभी का सार यही है – **जब भी किसी ने सच्चे भाव से रक्षा-सूत्र बांधा, सामने वाले ने विपत्ति में उसकी रक्षा कर अपने वचन को निभाया।**

सच कहें तो, रक्षाबंधन सिर्फ एक धागा नहीं है, यह विश्वास का वो सूत्र है जो भाई-बहन को जीवन भर के रिश्ते में बाँधता है। भारतीय परंपरा में इस धागे को लोहे से भी अधिक मजबूत माना गया है, जो प्रेम, विश्वास और समर्पण से जुड़ा होता है।

www.
पूरा पढ़े

पूरा पढ़े www.

पूरा पढ़े www.

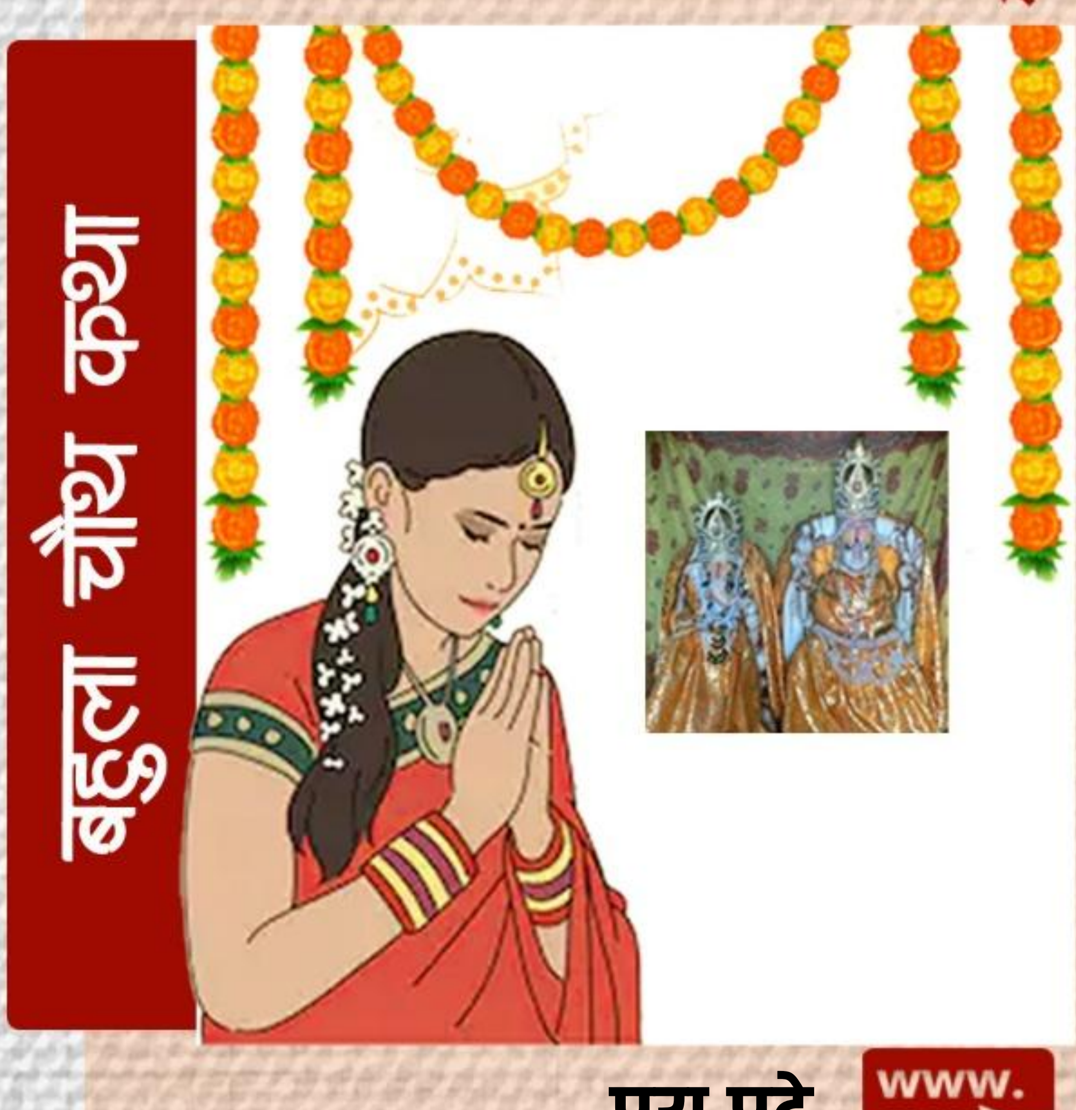

पूरा पढ़े www.

हिन्दू धर्म में त्योहारों का विशेष महत्व है, खासकर सावन का महीना प्रेम, उमंग और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। इस दौरान तीज व्रत तीन बार आता है – **हरियाली तीज, सातुड़ी तीज (जिसे कजली, बड़ी या बूढ़ी तीज भी कहते हैं) और हरतालिका तीज।** भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाई जाने वाली बड़ी तीज, विशेष रूप से राजस्थान, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में धूमधाम से मनाई जाती है। इस दिन सुहागिन महिलाएं पति की लंबी उम्र और अविवाहित लड़कियां अच्छे जीवनसाथी की कामना के लिए व्रत रखती हैं, कई इसे निर्जला भी करती हैं।

आप सोच रहे होंगे कि तीज के दिन नीम की डाली की पूजा क्यों की जाती है? जैसा कि शास्त्रों में बताया गया है, पेड़ों की पूजा सुबह करना शुभ माना जाता है, जबकि दोपहर बाद या शाम को ऐसा करना वर्जित है क्योंकि उस समय पेड़ों पर नकारात्मक शक्तियों का वास माना जाता है। चूंकि तीज की पूजा संध्या समय होती है, इसलिए नीम की टहनी को सुबह ही तोड़कर लाया जाता है। फिर उसे घर, मंदिर या किसी स्वच्छ स्थान पर पानी, कच्चे दूध और मिट्टी से बनाए गए घेरे में रोप दिया जाता है, जहां महिलाएं सामूहिक रूप से पूजा करती हैं। पूरा पढ़े www.

उपछठ व्रत

उपछठ व्रत भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया जाता है। **यह व्रत महिलाएं संतान की दीर्घायु और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना से उपवास करती हैं।** इस दिन व्रती महिलाएं दिनभर उपवास रखती हैं और संध्या समय स्नान कर पूजा करती हैं। तैयार **होकर वे चंद्रमा के उदय तक खड़ी रहती हैं** और तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करतीं। चंद्रमा को अर्घ्य (अरख) देने के लिए वे मंदिरों या खुले स्थानों पर जाती हैं। चंद्रमा के दर्शन और अर्घ्य के बाद ही व्रत खोला जाता है।

उपछठ व्रत की कथा –

बलराम जन्म दिवस

द्वापर युग में भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को भगवान श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता श्री बलराम जी का जन्म हुआ था। **उन्हें शेषनाग का अवतार माना जाता है, जो धर्म, शक्ति और संतुलन के प्रतीक हैं।** बलराम जी का प्रमुख शस्त्र हल और मूसल है, इसलिए उन्हें "हलधर" कहा जाता है। इसके अलावा वे संकर्षण, हलायुध, काम, रोहिणीनन्दन और नीलाम्बर जैसे अनेक नामों से भी प्रसिद्ध हैं। बलराम जी कृषि संस्कृति और श्रमशील जीवनशैली के प्रतीक माने जाते हैं। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और हल किसान का सबसे बड़ा साधन है, इसलिए बलराम जन्मोत्सव पर हल की पूजा करने की परंपरा है। यह दिन केवल धार्मिक श्रद्धा का नहीं, बल्कि धरती और किसान के प्रति सम्मान का पर्व भी है। **बलराम जन्मोत्सव को हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी और चंद्र षष्ठी (छठ) के नाम से भी जाना जाता है।**

पूरा पढ़े www.

सैनिक वीर देश- रक्षा में,
निशदिन तत्पर रहते हैं।
डटे हुए हैं सीमाओं पर.
दुश्मन से वे लड़ते हैं।

शान तिरंगे की रखते हैं,
अपना खून बहाते हैं।
भारत माँ की सेवा में रत,
धन्य सपूत कहाते हैं।
स्नेह और सम्मान में उनको,
पावन रक्षा - सूत्र है भेजा।
भारत रक्षा पर्व मनाएँ,
मन में आदर - भाव सहेजा।

सीना तान युद्ध में लड़ना,
नहीं मानना किंचित हार।
विजय श्री को वरण करोगे,
देश करेगा जय - जयकार।

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', विकासनगर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

बिताए न बीतें दिन – अपनों के बिन ।

परायों की भीड़ छँटी कभी न, अपनों में वह बँटी कभी न।
अपनत्व की बारिश हम करते रहे,
ज़िंदगी उनके संग कटी कभी न।

चुभे अकेलेपन के पिन – अपनों के बिन ।

पर्व आए, गए, फिर आए, ख़ुशियाँ कभी मना न पाए।
औपचारिकता का निबाह तो किया,
दिल से हम रस्में निभा न पाए।

अपने, अपनों को पाए न चीन्ह – अपनों के बिन ।

संस्कार बच्चों से अब दूर ही रहे, मद में सदा वे चूर ही रहे।
प्यार होता पास तो बाँटते वही,
अपनों के प्रति वे क्रूर ही रहे।

अपनों से उन्हें आती है घिन – अपनों के बिन ।

दादी की वार्ता, नानी के किस्से –
आए न ज़रा भी अब उनके हिस्से।
पीड़ा है उनकी, यह इस सदी की;
वक़्त भी है बहरा – कहें वे किससे?

मन ही मन है घर सारा खिन्न – अपनों के बिन ।

– अशोक आनन जी, मक्सी, जिला: शाजापुर (म.प्र.)

🌸 कृष्ण जन्माष्टमी – भगवान श्रीकृष्ण का पावन जन्मदिवस

कृष्ण जन्मोत्सव, जिसे "**जन्माष्टमी**" के नाम से जाना जाता है, भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के उपलक्ष्य में पूरे भारत में विशेष श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद माह की अष्टमी तिथि, कृष्ण पक्ष में रोहिणी नक्षत्र में आता है। इस दिन को धर्म की पुनर्स्थापना और अधर्म के विनाश के प्रतीक रूप में मनाया जाता है। उत्तर भारत, गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश (विशेषकर मथुरा-वृंदावन), महाराष्ट्र सहित देश के विभिन्न हिस्सों में इस दिन भक्ति, उत्सव और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

- 🔱 दिनभर व्रत व उपवास रखना, रात्रि में श्रीकृष्ण जन्म का भव्य उत्सव
- 🔱 झांकियों और सजावट से मंदिर और घरों का श्रृंगार
- 🔱 श्रीकृष्ण की मूर्तियों का पंचामृत से अभिषेक, माखन-मिश्री का भोग
- 🔱 श्रीकृष्ण जन्म का मध्यरात्रि में उत्सव और भजन-कीर्तन

🌟 दही हांडी – माखनचोर की लीला की झलक

जन्माष्टमी के अगले दिन मनाया जाने वाला दही हांडी उत्सव, भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं की याद दिलाता है। विशेष रूप से महाराष्ट्र में यह पर्व बड़े ही रोमांचक ढंग से मनाया जाता है। **श्रीकृष्ण बचपन में अपने दोस्तों संग मिलकर मक्खन चुराने के लिए मटकी फोड़ा करते थे। इसी परंपरा को निभाने के लिए ऊँचाई पर रंग-बिरंगी दही हांडी सजाई जाती है। युवक-युवतियों की 'गोविंदा' टोलियाँ मिलकर मानव पिरामिड बनाते हैं और मटकी फोड़ने का रोमांचक प्रयास करते हैं।** हजारों की भीड़ और उत्साह का चरम होता है।

🌺 **त्योहार का संदेश:** कृष्ण जन्मोत्सव और दही हांडी केवल धार्मिक परंपराएँ नहीं हैं, बल्कि यह हमारी संस्कृति, एकता और उल्लास का प्रतीक हैं। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएँ हमें प्रेम, साहस, धर्म और कर्तव्य का संदेश देती हैं। यह पर्व हमें साथ आकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को संजोने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का अवसर देता है।

पूरा पढ़े www.

भारतीय परम्परा™

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

- ❖ व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ❖ भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ❖ ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ❖ ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- ❖ **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

भादवा महीने में कृष्ण पक्ष की बारस (द्वादशी) को बछ बारस के रूप में मनाया जाता है। जिसे **"वत्स द्वादशी" और "गोवत्स द्वादशी"** भी कहते है।

बछ बारस का महत्व मुख्यतः गायों और उनके बछड़ों की पूजा से जुड़ा है। हिन्दू धर्म में गाय को माँ का दर्जा दिया गया है और उसे बहुत पवित्र माना जाता है। गाय के बछड़ों की पूजा करने से संतान सुख और परिवार की समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। इस दिन महिलाएं सुबह स्नान करके व्रत रखती हैं और गाय-बछड़े की पूजा करती हैं। साथ ही वे गाय के गोबर से बने प्रतिकृति की पूजा करती हैं माताएं अपनी संतानों के लिए दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना करती हैं। **बछ बारस के दिन गाय का दूध और दूध से बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन, घी आदि का उपयोग नहीं किया जाता। इस के अलावा गेहूँ तथा उससे बनी चीजें भी नहीं खाते है।**

बछ बारस का यह त्योहार हमारे सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस दिन की पूजा-अर्चना और व्रत से न केवल संतान की भलाई होती है, बल्कि यह हमारे समाज में पशु प्रेम और संरक्षण की भावना को भी प्रबल बनाता है।

बछ बारस की पूजा कैसे करते है ?

WWW
पूरा पढे

बछ बारस की कथा -

WWW
पूरा पढे

पर्युषण पर्व

पर्युषण पर्व जैन धर्म का एक प्रमुख धार्मिक उत्सव है, जो आत्मा की शुद्धि, करूणा की संवेदनशीलता और अहिंसा के सिद्धांतों को मनाने के लिए समर्पित होता है। इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक अनुशासन, तपस्या और आत्मा की पवित्रता को प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर, जैन समुदाय के लोग उपवासन, ध्यान और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करते हैं।

पूरा पढ़े www.

पोळा पर्व

पोळा पर्व महाराष्ट्र का एक प्रमुख त्योहार है, जो किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है। यह त्योहार श्रावण माह की अमावस्या को मनाया जाता है और मुख्य रूप से बैल, गाय, और अन्य कृषि उपकरणों की पूजा के रूप में जाना जाता है। इस दिन, किसान अपने बैलों को स्नान कराकर उन्हें सजाते हैं, और उनकी पूजा करके उनके स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना करते हैं।

पूरा पढ़े www.

मारबत पर्व

मारबत मारबत – नागपुर शहर में पोळा के दिन दो **मारबत** निकलती है। 'मारबत' एक देवी का रूप है जो बुरी ताकतों और बीमारियों से स्थानीय लोगों का बचाव करती है। **काली मारबत भीषण व भयानक होती है और पीली मारबत देवी का स्वरुप होती है।**

पूरा पढ़े www.

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

आज प्रतिस्पर्धा का दौर हैं और समय ने तेज़ी से करवट बदली है। प्रतिस्पर्धा के चौड़े मैदान में आगे की राह उसी को मिलती हैं जो निरंतर चलना जानता है। ठहराव का विकल्प लक्ष्य को ओझल कर देता है। लेकिन इस मार्ग चलना आसान नहीं है क्योंकि यह बड़ा कंटीला है।

हर कदम हर मोड़ पर अनिश्चितता, खतरा और सफलता के पहले हतोत्साहित करने वाली कई असफलताएं मुंह बांए खड़ी होती हैं। कभी-कभी तो निराशा इस कदर घेर लेती है कि आदमी राह बदलने को मजबूर हो जाता है मगर फिर भी जो इन खतरों से जूझते हैं बदलाव की राह उन्हें ही मिलती हैं। एक नई दिशा वही तय करते हैं।

एक महत्वपूर्ण पहलू यह कि जोखिम उठाना केवल साहस का काम नहीं यह दूरदृष्टि का परिचायक है। जब कोई व्यक्ति पुराने ढर्रे को छोड़कर नया रास्ता चुनता है तब वह अपने साथ सिर्फ सपने नहीं बल्कि परिवर्तन की संभावनाएं भी लेकर चलता है। चाहे बात नये व्यवसाय की हो, कोई सामाजिक आंदोलन, या व्यक्तिगत विकास की कोई यात्रा सबकी शुरुआत एक जोखिम से होती है। आज के संदर्भ में जब पूरी दुनिया तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक मोर्चों पर बदलाव की ओर बढ़ रही है तब सिर्फ सुरक्षित राह ढूंढने वाले पीछे छूट जाते हैं।

डर जिनके दिल में छुपा रहता है वह नया क्षितिज, नई ऊंचाई और मुक्ताकाश नहीं देख पाते। इसलिए जीवन में अगर बदलाव लाना है समाज या व्यवस्था में तो खतरे उठाने की हिम्मत करना ही पड़ेगी। इसी जोखिम से आगे चलकर उन्नति के नए अवसर सामने आते हैं। इस बात को अच्छी तरह जेहन रखना कि जो जोखिम से नहीं डरता परिवर्तन उसी के आगे नतमस्तक होता है, और **जो नई सोच से सकारात्मक बदलाव लाता है दुनिया उसी के नक्शे कदम पर चलती है।**

- अमृतलाल मारू जी, 'रवि', इंदौर (म.प्र.)

"रागिनी! ज़रा अपनी पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद की जितनी भी डिग्रियाँ हैं, सब ले आओ," आरती की थाली लिए सासू माँ ने मुस्कराते हुए कहा।

रागिनी चौंकी, फिर मुस्कराकर मोबाइल स्क्रॉल करते हुए बोली,
"मम्मी जी! आप मेरी डिग्रियों का क्या करेंगी? आपको उनसे क्या मतलब?"

थाली को पूजा स्थान पर रखती हुई सासू माँ गंभीरता से बोलीं,
"मैं मज़ाक नहीं कर रही रागिनी।"

सासू माँ की आवाज़ की गंभीरता सुनते ही रागिनी थोड़ी घबराई, मोबाइल एक ओर रखते हुए बोली, "पर मम्मी जी, डिग्रियाँ क्यों चाहिए आपको? मैं कुछ समझ नहीं पाई।"

सासू माँ ने संयम से उत्तर दिया, **"गैस खत्म हो चुकी है, अब चूल्हे में लकड़ी डालकर खाना बनाना है।"**
"क्या?!" रागिनी हैरान हो गई। "मम्मी जी, बात को ऐसे गोल-गोल क्यों घुमा रही हैं? ये तो कोई वजह नहीं हुई!"

सासू माँ अब स्पष्ट थीं –"तुम हर सवाल का जवाब रखती हो रागिनी, लेकिन यह समझने की कोशिश नहीं करती कि मैं क्या कहना चाहती हूँ**। दिनभर मोबाइल, रील्स, व्हाट्सएप... यही दिनचर्या बन गई है। क्या इसी के लिए तुम्हारे माँ-बाप ने एक-एक पाई जोड़कर तुम्हें पढ़ाया?"**

"हमारे पास भगवान का दिया सब कुछ है। मैं चाहती हूँ कि तुम अपनी योग्यता को पहचानो और उसे किसी सार्थक कार्य में लगाओ। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स आज बहुत कुछ करने की आज़ादी देते हैं – **घर बैठे भी समाज को प्रेरित कर सकती हो। सोशल मीडिया पर सिर्फ समय नष्ट नहीं होता, सही दिशा में इसका उपयोग करोगी तो न केवल खुद आगे बढ़ोगी, बल्कि औरों को भी दिशा दोगी।"**

रागिनी की आँखें भर आईं। भावुक होकर वह बोली,
"मम्मी जी! आपने तो आज मेरी आँखें खोल दीं। मुझे नहीं पता था कि ससुराल ऐसा भी हो सकता है, जहाँ बहुओं को उड़ान भरने की प्रेरणा दी जाती है। **आपने मेरे बंधे हुए पंखों को आज़ादी दे दी। मैं धन्य हूँ कि आप जैसी सासू माँ मुझे मिलीं।"**

इतना कहकर रागिनी ने उन्हें गले से लगा लिया। सासू माँ ने उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरा।

यह कहानी एक गहरा संदेश देती है – **योग्यता केवल डिग्रियों तक सीमित न रह जाए, बल्कि जीवन को दिशा देने वाले कार्यों में प्रकट हो।**

- **प्रिया देवांगन जी, "प्रियू", राजिम, जिला – गरियाबंद (छत्तीसगढ़)**

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है । पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

8610502230
(केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।

1) तिरंगा डेज़र्ट -

सामग्री: व्हिप क्रीम – ½ कप, कद्दूकस किया हुआ पनीर – ½ कप, आम का टिन वाला पल्प – 4 टेबल स्पून, दूध में मिला केसर – 2 टीस्पून, कीवी क्रश – 2 टेबल स्पून, सजावट के लिए – मेवा की कतरन ।

विधि: सबसे पहले व्हिप क्रीम को अच्छी तरह फेंट लें। फिर उसमें कद्दूकस किया हुआ पनीर मिलाकर अच्छे से मिक्स करें। अब इस तैयार मिश्रण को तीन बराबर भागों में बाँट लें। पहले हिस्से में आम का पल्प और केसर मिला दूध डालें। दूसरे हिस्से में कीवी क्रश मिलाएं। तीसरे हिस्से को ऐसे ही सफेद छोड़ दें।

अब एक पारदर्शी गिलास लें। सबसे पहले कीवी वाला हरा मिश्रण डालें, फिर उसके ऊपर सफेद वाला भाग डालें, और अंत में ऊपर से आम और केसर वाला पीला मिश्रण डालें। ऊपर से मेवा की कतरन से सजाएं और फ्रिज में ठंडा करके सर्व करें।

2) लो कैलोरी पनीर खीर-

सामग्री: बिना मलाई वाला पनीर – 1 कप, टोंड दूध – 1 कप, मिल्क पाउडर – 2 चम्मच, कॉर्नफ्लोर – 2 चम्मच, स्वादानुसार शक्कर, गुलाब एसेंस – 1 बूंद, सजावट के लिए – मेवा की कतरन व गुलाब की पत्तियाँ।

विधि: एक बर्तन में दूध को गर्म करें। दूसरी ओर ठंडे दूध में कॉर्नफ्लोर घोल लें और उबलते दूध में धीरे-धीरे मिलाते जाएँ। अब इसमें कद्दूकस किया हुआ पनीर, मिल्क पाउडर और शक्कर मिलाएं। धीमी आँच पर लगातार चलाते हुए थोड़ा गाढ़ा होने तक पकाएँ।

जब मिश्रण गाढ़ा हो जाए तो गैस बंद करें और इसे ठंडा होने दें। फिर इसमें गुलाब एसेंस, मेवा कतरन और गुलाब की पत्तियाँ मिलाएं। अच्छी तरह ठंडा होने पर राखी के दिन इसे भैया-भाभी को प्रेम से परोसें।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

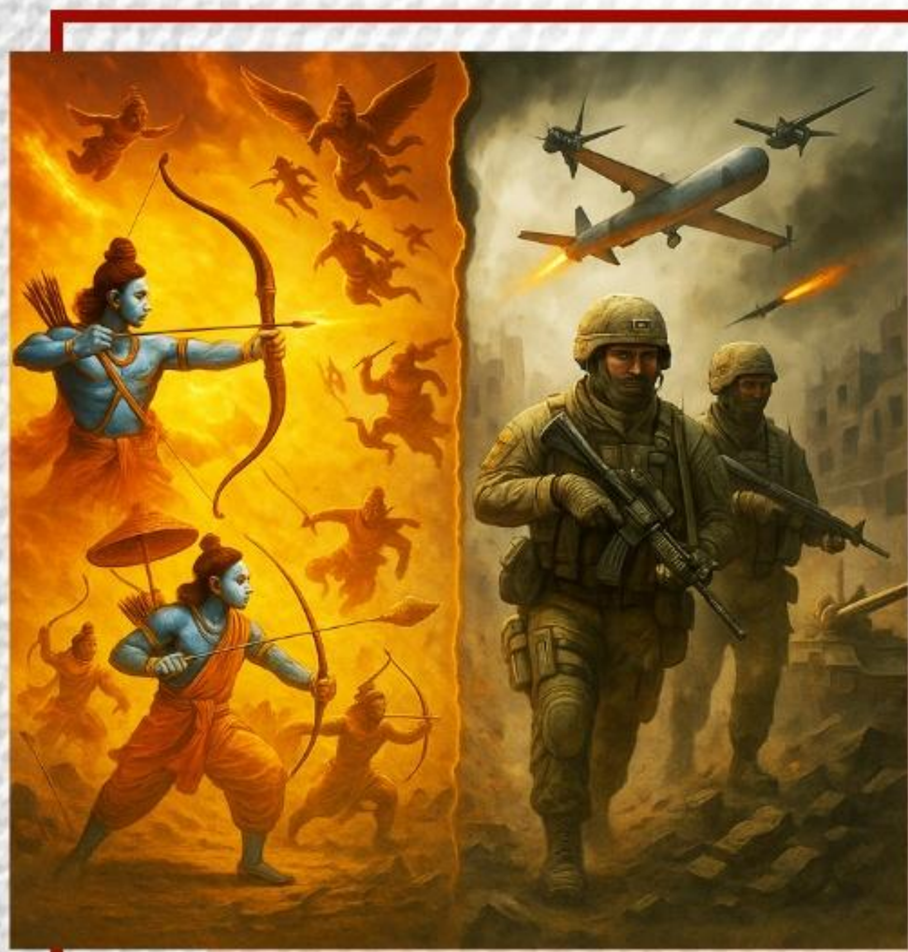

भारत की प्राचीन युद्ध परंपरा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में परिलक्षित होती है, जहाँ युद्ध को धर्म और नीति का साधन माना गया है। इसके विपरीत, 20वीं एवं 21वीं सदी के युद्ध मुख्यतः राजनीतिक सत्ता, भू-सामरिक प्रभुत्व एवं आर्थिक संसाधनों के नियंत्रण हेतु लड़े गए हैं—और कुछ अब भी लड़े जा रहे हैं।

युद्ध का उद्देश्य:

रामायण में युद्ध रावण जैसे अधर्मी राजा के विरुद्ध था, जिसने स्त्री का अपहरण कर धर्म का उल्लंघन किया। महाभारत में युद्ध कौरवों के अन्याय, छल और सत्ता के अनुचित हरण के विरुद्ध अंतिम उपाय के रूप में हुआ। दोनों महाकाव्यों में युद्ध धर्म की स्थापना हेतु अपरिहार्य माना गया।

इसके विपरीत, आधुनिक काल के युद्धों का उद्देश्य राष्ट्रहित, सामरिक रणनीति, प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण तथा वैश्विक प्रभुत्व बन चुका है।

युद्ध की नैतिक संहिता:

रामायण-महाभारत में युद्ध के स्पष्ट नैतिक नियम थे। रात्रिकालीन युद्ध निषिद्ध था, समकक्ष योद्धाओं के मध्य ही युद्ध की अनुमति थी, निहत्थे अथवा शरणागत पर आक्रमण वर्जित था। दुर्योधन को गदा युद्ध में जंघा पर प्रहार को लेकर विद्वानों में आज भी नैतिक बहस होती है, जो उस युग की युद्ध नीति की गहराई को दर्शाता है।

आधुनिक युग में जिनेवा संधि जैसी संहिताएं युद्धों को कुछ हद तक नियंत्रित करने का प्रयास करती हैं, किंतु नागरिकों को लक्षित करना, रासायनिक हथियारों का उपयोग और साइबर युद्ध जैसी अमानवीय प्रवृत्तियाँ इन नियमों का उल्लंघन करती हैं।

संधि प्रयास:

रामायण और महाभारत काल में युद्ध न हो, इसके लिए भरपूर प्रयास किए जाते थे। श्रीराम ने रावण को संधि प्रस्ताव भेजने हेतु अंगद को भेजा, जबकि युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण को धृतराष्ट्र के पास संधि प्रस्ताव लेकर भेजा।

आज के युग में संधियाँ युद्ध समाप्त करने के लिए होती हैं, वह भी शक्तिशाली देशों के दबाव में। अधिकतर संधियों में वही देश लाभान्वित होता है, जिसके पक्ष में सामरिक महाशक्तियाँ खड़ी रहती हैं।

युद्ध के साधन एवं तकनीक:

रामायण-महाभारत काल में धनुष-बाण, गदा, तलवार, रथ, अश्व एवं दिव्यास्त्र युद्ध के प्रमुख साधन थे। दिव्यास्त्रों का प्रयोग सीमित और उद्देश्यपूर्ण होता था, जिनके लिए तपस्या और मंत्रज्ञान आवश्यक था।

वर्तमान युद्ध प्रणाली में मिसाइल, परमाणु बम, टैंक, युद्धक विमान, ड्रोन, उपग्रह-आधारित निगरानी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साइबर हमले शामिल हैं, जो युद्ध को अत्यधिक विनाशकारी बना चुके हैं। युद्ध अब भौतिक रणभूमि से हटकर आभासी सीमाओं में भी लड़े जा रहे हैं।

नेतृत्व और सैनिक की भूमिका:

रामायण-महाभारत में राजा स्वयं युद्ध का नेतृत्व करता था और अग्रिम पंक्ति में लड़ता था। आज युद्ध का नेतृत्व वार रूम और नियंत्रण केंद्रों में सीमित है, जहाँ से तकनीकी माध्यमों से संचालन होता है। सैनिकों की भूमिका व्यक्तिगत शौर्य से अधिक एक सामूहिक प्रणाली का अंग बन गई है।

युद्धोपरांत स्थिति:

प्राचीन काल में युद्ध के पश्चात सामाजिक पुनर्निर्माण एवं धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा पर बल दिया जाता था। श्रीराम का रामराज्य और युधिष्ठिर का शांतिपूर्ण शासन इसके उदाहरण हैं। युद्ध से हुई क्षति के लिए राजा प्रायश्चित भी करता था।

आधुनिक युद्धों के उपरांत दीर्घकालिक सामाजिक, मानसिक एवं पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होते हैं। पुनर्निर्माण प्रक्रिया बहुराष्ट्रीय हितों के अधीन रहती है और शांति स्थापना जटिल होती जा रही है।

निष्कर्ष:

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य युद्ध को केवल शक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि धर्म और नीति की परीक्षा मानते थे। आधुनिक युद्ध, इसके विपरीत, नैतिकता से दूर तकनीकी अतिरेक और वैश्विक असंतुलन के प्रतीक बन गए हैं। आज की दुनिया को आवश्यकता है कि वह प्राचीन युद्ध परंपराओं से प्रेरणा लेकर युद्ध की नैतिकता और मानवता को पुनः केंद्र में स्थापित करे। मानवता की रक्षा के लिए कोशिश तो यही होना चाहिए कि युद्ध न हो। यदि युद्ध जैसी परिस्थितियां निर्मित भी हो तो बातचीत से समाधान निकाला जाना चाहिए।

- डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव जी, इंदौर (म.प्र.)

91. सीता-हरण में रावण का साथ किसने दिया था?
– ताड़का के पुत्र मारीच ने।

92. मारीच कौन था?
– मारीच ताड़का का पुत्र था। अन्य सन्दर्भों के अनुसार, वह रावण की माता कैकसी का भाई था। इस नाते मारीच, रावण का मामा भी कहलाता है।

93. मारीच ने रावण को क्या सलाह दी?
– मारीच ने रावण से कहा कि उसे सीता-हरण का विचार त्याग देना चाहिए, क्योंकि सीता पतिव्रता व तपस्विनी नारी हैं और श्रीराम की शक्ति व पराक्रम की कोई सीमा नहीं है।

94. राक्षस मारीच भगवान श्रीराम की शक्ति से कैसे परिचित था?
– महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते समय श्रीराम के बाण प्रहार से मारीच घायल होकर सौ योजन दूर समुद्र में जा गिरा था।

95. क्या सीता माता ने अग्नि में निवास किया था? और कब?
– सीताहरण की घटना से पहले, भगवान श्रीराम ने सीता से कहा – "अब मैं कुछ मनोहर मनुष्य-लीला करूंगा। अतः जब तक मैं राक्षसों का संहार न कर लूं, तब तक तुम अग्नि में निवास करो।" तत्पश्चात, सीता माता प्रभु के चरणों को हृदय में धारण कर अग्नि में समा गईं और लौकिक जगत में अपनी छाया-मूर्ति छोड़ गईं, जो उन्हीं के समान शील, स्वभाव और रूपवाली थी। यह लीला लक्ष्मण जी को भी ज्ञात नहीं थी।

96. रावण ने सीता-हरण की क्या योजना बनाई?
– रावण ने मारीच से कहा कि वह एक स्वर्णमृग का रूप लेकर आश्रम के समीप विचरण करे, ताकि सीता आकर्षित होकर श्रीराम से उसे पकड़ लाने का आग्रह करें। जब श्रीराम उसे पकड़ने चले जाएं और मारीच राम की आवाज़ में "हा सीते! हा लक्ष्मण!" पुकारे, तब लक्ष्मण भी आश्रम छोड़ दें और रावण आसानी से अकेली सीता का हरण कर ले।

97. स्वर्णमृग देखकर सीता ने राम से क्या कहा?

– सीता ने राम से आग्रह किया कि स्वर्णमृग को जीवित या मृत अवस्था में लेकर आएं।

98. जाते समय भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण से क्या कहा?
– -कि जब तक वह वापस नहीं आ जाते तब तक सावधान रहकर सीता की रक्षा करना।

99. "हा सीते! हा लक्ष्मण!" की आवाज सुनकर सीता ने क्या कहा?
– सीता ने कहा, "तुम्हारे भाई आर्तनाद कर रहे हैं, लगता है संकट में हैं। तुम जाओ और रघुनाथ जी की सुधि लो।"

100. क्या लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए लक्ष्मण रेखा खींची थी?
– वाल्मीकि कृत रामायण व तुलसीदास रचित रामचरितमानस में "लक्ष्मण-रेखा" प्रसंग का कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन जनआस्था है कि सीता माता के कहने पर भगवान श्रीराम की सहायता हेतु जाने से पहले लक्ष्मण ने अपने बाण से आश्रम के चारों और एक रेखा खींच कर सीता माता से कहा था कि देवता, दानव, नर इत्यादि कोई भी इस रेखा को लांघ नहीं सकेगा। इसलिये आप किसी भी परिस्थिति में इस रेखा को नहीं लांघे। सीताहरण के अपने दुष्कर्म के दौरान जब रावण भी इसको नहीं लांघ सका तो उसने सीता माता को लक्ष्मण रेखा लांघ कर भिक्षा देने को कहा। माता के मना करने पर ब्राह्मण वेशधारी राक्षस ने श्राप का भय दिखाया तो सीता माता ने लक्ष्मणरेखा को लांघा, परिणाम सभी जानते है। इसलिये जीवन में सामाजिक, धार्मिक व नैतिकता की लक्ष्मण रेखा, कदापि न लांघे।

101. रावण ने सीता का हरण करने के लिए कौन-सा वेश धारण किया था?
– उसने गेरुए वस्त्र पहने और हाथ में कमंडल लेकर ब्राह्मण का वेश धारण किया।

102. अपहरण से पहले रावण ने सीता के समक्ष कौन-सा प्रस्ताव रखा?
– विवाह का प्रस्ताव।

103. जब रावण आकाश मार्ग से सीता को लंका ले जा रहा था, तब किसने उसका विरोध किया?
– गृध्रराज जटायु ने। उन्होंने रावण को सीता को छोड़ने की सलाह दी और मना करने पर युद्ध के लिए ललकारा।

क्रमशः... (अगले माह), – **माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)**

औलाद चाहे कितनी भी
बिगडैल हो, लेकिन
शादी के कार्ड में 'सुपुत्र'
लिखवाना ही पड़ता है..!

इस आलू को भी
किसी दिन फांसी देनी पड़ेगी....
साले का हर सब्जी
के साथ Affair है..!

दुनिया का सबसे बोहतरीन
सिंगर मच्छर है..
उसका गाना किसी को
पसंद आये चाहे न आये
ताली सबको बजानी
पड़ती है..!

डाइटिंग के लिए
डिनर में एक रोटी कम खाई
फिर रात को उठकर
3 रोटी खानी पड़ी तब
जाकर नींद आई..!

इंटरनेट के आविष्कार से
जिंदगी कितनी आरामदायक हो
गई है यह एक बैंक कर्मचारी
ज्यादा कौन समझ सकता है?
बड़े आराम से कह देते हैं,
सर्वर डाऊन है..!

आज कोई पूछ रहा था कि
सही शब्द नर्क है या नरक है?
तो मैंने कहा,
'आपको जाने से मतलब है
या शब्द से?'
तबसे नाराज है..!

सच कहने का साहस है, सलीका है कविता

कविता, पद्य की सबसे खूबसूरत विधा है और दिल तक पहुँचने की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति भी। कविता तुकांत और अतुकांत दो तरह से लिखी जा सकती है। बातचीत की खूबसूरत अभिव्यक्ति ही कविता है। **नारी का श्रृंगार, प्रकृति का सौंदर्य, प्रेम की अनुभूति, फूल का खिलना और महकना, बच्चे का खिलखिलाकर हँसना, नदियों का अविरल बहना, पंछियों का कलरव करना, प्रपात का झर-झर झरना, दिनकर का उगना, चाँद का दर्श, बादलों में लालिमा का छाना, इंद्रधनुष के मनभावन सप्तरंग, प्रकृति की अनुपम मनहर छटाएँ, माँ की लोरियाँ और पिता का वात्सल्य ही कविता की सुंदर भावाभिव्यक्ति है।**

सच कहने का साहस है, सलीका है कविता। कविता कवि की आत्मा है, साक्षात्कार है, आत्मा का परमात्मा से। झूठ को कत्ल करने का शस्त्र भी है कविता। कविता गूँगे-बहरों की जुबान भी हैं और शाश्वत प्रेम की अनुभूति भी है। कविता कांटों के जंगल में खिला खूबसूरत गुलाब का फूल है। कविता ईश्वर की आराधना है, त्याग, तपस्या, साधना है। देश की चौकीदार है कविता। कविता शांति है, क्रांति है, भ्रांति है और मरंति भी है। कविता प्रेम की युक्ति है, विरहन की विरक्ति है, मीरा की भक्ति है और राधा की शक्ति है। कविता नंगे बदन का लिबास है, फूलों में खुशबू का वास है और सुनहरे सपनों का दिव्य आकाश है। घने अंधकार में आस और भरोसे की टिमटिमाती हुई एक लौ है...कविता।

दुष्कर्म के घिनौने कृत्य पर एक करारा प्रहार है कविता। **ममता का सागर है, माँ का वात्सल्य है, पिता का त्याग है, समर्पण है, तपस्या है और संघर्ष की एक संपूर्ण गाथा है कविता।** कविता, गम की दवा है, माँ की दुआ है और लू के थपेड़ों में शीतल हवा है। कविता शब्दों की जादूगरी है और सत्ता की बाजीगरी है।

कविता एक कला है और शब्दों की कारीगरी है। कविता बेलगाम सत्ता रुपी अश्व की लगाम है और हर एक प्रकार के दर्द का अचूक बाम है। कविता दैरो-हरम है, शिवाला है, अमृत का प्याला है और धधकते हुए अंगारों पर पाँव का छाला है। कविता, फाकामस्ती में रोज त्यौहार है। कविता, चीख है, पुकार है, दुश्मनों का संहार है। देश पर आंच आए तब कविता तलवार है और मखमल के बिस्तर पर सुलगता अंगार है कविता। कविता, संबल है, हौसला है, हिम्मत है, प्रार्थना है, साधना है।

कविता कवि की जान है, उसका जहान है, कवि का मान-सम्मान है और कवि का स्वाभिमान है। निराशा के अरण्य में कविता आशा और विश्वास का एक प्रज्जवलित अखंड दीपक है। कविता एक सादगी है, बांकपन है, संजीदगी है, पूजा है, अर्चना है, इबादत है और तपते मरु में खिला खूबसूरत-सा एक ब्रम्ह कमल है। कविता युद्ध की विभीषिका पर अम्न और प्रेम का पैगाम है। कविता धधकते हुए ज्वालामुखी के लावे पर मुसलसल गिरती बर्फबारी की शीतलता है। कविता ऐसा दरिया है जो दरिया-दरिया से मिलकर सागर और सागर से महासागर बनता है। कविता एक अनंत आकाश है जिसमें कुछ सपनें हैं, कुछ ख्वाहिशें हैं और जीवन जीने की ललक भी है कविता। सागर की अथाह गहराइयां है कविता जिसमें कई सीपियाँ हैं और कई बेशकीमत मोती भी है।

कविता का काम पुल बनाकर इंसान को इंसान से जोड़ना है। कविता, सीता की अग्नि परीक्षा है, अभिमन्यु का चक्रव्यूह है, कृष्ण का सुदर्शन है और राम का वनवास है। **आदमी के भीतर की संवेदनाएँ मर चुकी है किंतु मानवता आज भी जिंदा है...कविता के भीतर।**

- नलिन खोईवाल जी, इंदौर (म.प्र.)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने
सभी अंकों को देखने के लिए किताब
के आइकन पर स्पर्श करें !!

"समय सब कुछ सिखा
देता है,
बस हँसते रहना न भूलो –
वरना लोग यह भी
सिखा देंगे कि कैसे रोते हैं!"

"सपने बड़े देखो,
पर अलार्म छोटा लगाओ,
वरना नींद में ही
रह जाओगे!"

"जो मुस्कुरा रहा है,
समझो उसने जिंदगी को
समझ लिया है;
और जो हँसा रहा है,
समझो उसने जिंदगी को
जीत लिया है!"

"तारीफ और मोबाइल
बैलेंस – दोनों संभाल कर
खर्च करने चाहिए,
जरूरत पड़ने पर
बहुत काम आते हैं!"

"गलतियां आईने की
तरह होती हैं, जिनमें चेहरा तो
सबका साफ दिखता है,
पर साफ करने की
हिम्मत बहुत कम
लोग करते हैं!"

"दुनिया में सबसे सुंदर
चीज़ मुस्कान है –
मुफ्त मिलती है,
फिर भी लोग
कंजूसी करते हैं!"

सामाजिक संकट एवं सांस्कृतिक अवसाद की ओर बढते भारतीय परिवार

समाज का सबसे गहरा संकट तब जन्म लेता है, जब उसकी सबसे मूल इकाई **– परिवार अपने ध्येय और दायित्व को विस्मृत करने लगती है। आज यह स्थिति हमें समाज में दृष्टिगोचर हो रही है।** भारतीय जीवन-दृष्टि में परिवार केवल एक सामाजिक संरचना मात्र नहीं है, वरन् वह एक जीवंत, स्पन्दनशील और आध्यात्मिक संस्था के रूप में स्थापित रहा है। पर आज जिस गति से परिवार की धुरी अपने अक्ष से डिग रही है, वह केवल सामाजिक संकट नहीं, सांस्कृतिक अवसाद है।

आधुनिकता की आंधी ने जहाँ अधिकारों और स्वतंत्रता की भाषा को स्वर दिया, वहीं उत्तरदायित्व और सह-अस्तित्व जैसे मौलिक तत्व चुपचाप नेपथ्य में चले गए हैं। इस विस्थापन का सर्वाधिक मार्मिक प्रभाव उस पीढ़ी पर पड़ा है जिसने परिवार की अवधारणा को निष्ठा, समर्पण और परंपरा से सींचा है।

पहले बेटे का विवाह घर में उत्सव का वातावरण रच देता था- माता पिता के मन में नई आशा और सुरक्षित भविष्य की रोशनी भर देता था। अब स्थितियां तेजी से बदल रही हैं। आज पुत्र का विवाह माता पिता के मन में आशंका, भय और असुरक्षा भाव लेकर आता है। कई माता-पिताओं के लिए तो अघोषित संकटकाल तक बन जाता है। यह बदलाव केवल माता-पिता की स्थिति में ही नहीं आया है बेटा भी उतना ही प्रभावित हुआ है।

विवाहोपरांत जब बेटा पत्नी के साथ एक स्वतंत्र इकाई के रूप में खड़ा होता है, तो यह स्वाभाविक सामाजिक विकास प्रतीत होता है। किंतु जब उस इकाई के घेरे उसके लिए अपने मूल परिवार के प्रति एक उदासीनता, संकोच या परोक्ष अपराधबोध का कारण बनने लगते हैं, तो यह एक गहरे आंतरिक द्वंद्व का संकेत बन जाता है।

यह द्वंद्व अकेले बेटे का या अकेले माता पिता का नहीं होता, दोनों ही इसमें पिसते हैं। पुत्र एक ओर तो अपने जीवनसाथी की अपेक्षाओं और ससुराल पक्ष की अघोषित निगरानी के नीचे होता है और दूसरी तरफ माता-पिता की मौन आकांक्षाओं और स्नेह की स्मृतियों से जकड़ा होता है। इस दोहरे संघर्ष में फंसा उसका मन असमर्थता को चुप्पी में ढाल लेता है, और वह चुप्पी धीरे-धीरे रिश्तों के दरवाज़े बंद कर देती है। कई प्रकरण में हमने इसे आत्महत्या बनते भी देखा है।

माता-पिता अपना बेटा सुखी रहे और सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहे के भाव से चालित बहू से मिलने वाली अवमानना और उपेक्षा का कड़वा घूंट पीकर जीने की विवशता को स्वीकार कर लेते हैं। तनाव और दुःख के कारण अनेक बीमारियों से ग्रस्त भी हो जाते हैं, पर किसी से कुछ कहते नहीं।

इसी तारतम्य में हम यदि आज के विधिक परिदृश्य को देखते हैं तो वह पूरी लड़की के पक्ष में है तथा पुरुष और उसके परिवार के लिए उत्पीड़न के जोखिम से भरा है। **जिस समाज ने वर्षों तक स्त्री को दबाया था, वही समाज अब क्षतिपूर्ति की ऐसी प्रवृत्तियों में उलझ गया है। वह पुनर्संतुलन की जगह एक नया असंतुलन जन्म दे चुका है।** यह भय कि कोई भी बात शिकायत बन सकती है, और कोई भी मतभेद अपराध की श्रेणी में आ सकता है - यह एक मनोवैज्ञानिक असुरक्षा का भयावह संकेत बन गया है। इससे न केवल रिश्तों में संदेह आया है, बल्कि परिवार की सहजता, संवाद और आपसी विश्वास का क्षरण हो रहा है।

लड़की के माता-पिता जब अपनी बेटी के विवाहित जीवन में निरंतर उपस्थिति बनाए रखते हैं, तो यह 'संरक्षण' के नाम पर एक गुप्त आक्रामकता का रूप ले लेता है। यह आक्रामकता बेटी को तो यह विश्वास देती है कि वह सही है, भले ही उसकी दृष्टि कितनी ही सीमित, विकृत या स्वार्थ ग्रस्त हो। इसके विपरीत यह भाव लड़के के आत्मविश्वास को भीतर ही भीतर क्षीण करता है। धीरे-धीरे वह एक आत्म-संदेह की स्थिति में पहुँचता है - जहाँ न वह अपने निर्णयों पर भरोसा कर पाता है, न अपनी भावनाओं पर। यह आत्म-संदेह, मनोवैज्ञानिक रूप से एक व्यक्ति को निष्क्रिय, तनावग्रस्त और अवसादग्रस्त बनाता है। इन स्थितियों का सबसे गहरा, आघात होता है उन पर जिन्हें हमने 'वरिष्ठ नागरिक' कहकर सम्मानित तो किया, पर व्यावहारिक जीवन में उन्हें जीवन की देहरी पर अकेला छोड़ दिया।

वृद्धावस्था, जो भारतीय परंपरा में अनुभव, आशीर्वाद और मार्गदर्शन का काल था, आज एक मौन निर्वासन में परिवर्तित हो गया है। **जिन्होंने अपने जीवन के सबसे अच्छे वर्ष संतान की परवरिश में लगाए, वे अब दरकिनार कर दिए गए हैं - ना शिकायत कर सकते हैं, ना समीप आ सकते हैं। उनकी पीड़ा एक 'अस्वीकृत प्रेम' की तरह है - यह उन्हें भीतर से तोड़ देती है।** कई वृद्ध इस अस्वीकार्यता को मनोवैज्ञानिक अपमान की तरह झेलते हैं। वे अपने को आत्मसम्मान हीन और अस्तित्वहीन मानने लगते हैं। कुछ के लिए यह दुःख इतना तीव्र होता है कि वे जीवन से मुँह मोड़ने को विवश हो जाते हैं।

यह स्थिति केवल परिवारों के लिए ही नहीं, पूरे समाज के भावात्मक ढाँचे के विघटन की ओर संकेत है। हमारे यहां परिवार वह स्थान होता था जहाँ व्यक्ति स्वयं को बिना शर्त स्वीकृत पाता था, और आज वही स्थान भय, संकोच, अस्वीकार और संघर्ष की भूमि बन गया है—तो यह मात्र सामाजिक संकट नहीं, एक गहरा मनोवैज्ञानिक शून्य है। इस शून्य को अधिकारों से नहीं, केवल उत्तरदायित्व की पुनर्स्थापना से भरा जा सकता है।

आज जरूरत इस बात की नहीं कि हम स्त्री-पुरुष के अधिकारों का तुलनात्मक विश्लेषण करें, बल्कि इस बात की है कि हम संबंधों की भाषा को पुनः मानव केंद्रित, भावना केंद्रित और दायित्व-केंद्रित बनाएँ।

वरना आने वाले समय में परिवार केवल एक सामाजिक ढांचा मात्र रह जाएगा, जिसमें न ऊष्मा होगी, न आत्मीयता—सिर्फ एक अनाम विधिक समझौता, जो भीतर से सबको संवेदनहीन और खोखला बना देगा।

- डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव जी, इंदौर (म.प्र.)

हरतालिका तीज वास्तव में **'सत्यम शिवम सुंदरम'** के प्रति आस्था और प्रेम का व्यवहार है। वास्तव में हरतालिका तीज सुहागन का त्यौहार है। भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म में महिलाओं के जो विशेष व्रत होते हैं, उसमें हरतालिका तीज का विशेष एवं महत्वपूर्ण स्थान है।

अन्य व्रत की अपेक्षा इस व्रत के नियम कुछ कठोर हैं, यही कारण है कि यह व्रत संपूर्ण भारत में नहीं रखा जाता। यह व्रत विशेषकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश बिहार, झारखंड एवं राजस्थान के कई इलाकों में मनाया जाता है। यह देखते हुए कह सकते हैं यह व्रत विशेष कर हिंदी भाषी प्रदेशों में प्रमुखता से मनाया जाता है।

हरितालिका व्रत **"हस्त गौरी व्रत"** के नाम से भी जाना जाता है। यह **भादो मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया हस्त नक्षत्र में होता है** तथा हरियाली तीज के बाद आता है। माँ पार्वती का सौभाग्यदायक व्रत हरतालिका विवाहित

महिलाएँ और कुंवारी कन्याएँ श्रद्धा के साथ रखती हैं। भगवान शिव और पार्वती की पूजा अखंड सुहाग के लिए, पति सुख प्राप्त करने के लिए करती हैं। कुँवारी कन्याएँ पूजा कर अच्छा वर प्राप्त हेतु कामना करती हैं। चूँकि सुहागन स्त्रियाँ अखंड सुहाग के लिए व्रत करती हैं इसलिए इसे **"अखंड सौभाग्यवती व्रत"** भी कहा जाता है।

हरतालिका नाम क्यों?

भादो मास में प्रकृति अपने पूरे यौवन पर होती है। सभी ओर हरियाली छायी होती है। प्रकृति का सौंदर्य मनमोहक होता है। नव शाखा, नव किशलय, नव पल्लव एक दूसरे को स्पर्श कर प्यार का इजहार करते हैं, और मानव जीवन को भी मधुर एहसास होता हैं। कहा जाता है माता पार्वती महादेव को अपना पति बनाना चाहती थी, इसके लिए उन्होंने कठिन तपस्या की। **इसी तपस्या के दौरान पार्वती जी की सहेलियाँ पार्वती को हरण अर्थात अगवा कर ले गयी, इस कारण इस व्रत का नाम हरतालिका पड़ा।**

"हरत शब्द हरण से बना है जिसका अर्थ अपहरण करना तथा आलिका का अर्थ होता है सखी"। सखियों ने इसलिए अपहरण किया कि पार्वती जी की शादी विष्णु भगवान से ना हो जाए जबकि पार्वती शंकर जी से विवाह करना चाहती थी।

पूरा पढ़े www.

प्रथम पूज्य गणेश का, व्यक्तित्व है निराला।
गणपति स्वयं है ज्ञान की, पूर्ण पाठशाला॥

सोच को रखो बड़ी, उनका बड़ा मस्तक सिखाए।
सूप से लम्बे कान समझाते,
व्यर्थ वार्ता भीतर ना समाए॥

एकदंत की सीख ये, वस्तु का सही सदुपयोग हो।
छोटी-छोटी आँखें बतलाती,
सूक्ष्मता से जाँचकर ही निर्णय लो॥

बड़ा उदर हमें बताए, भोजन के साथ बातों को भी पचाना।
हिलती-डूलती सूंड सिखाती,
अपना जीवन सदैव सक्रिय बिताना॥

चार भुजाएं दिखाती, कर्म और सहायक स्वभाव को।
मूषक सवारी सिखाती
दुर्बल देह में इच्छाशक्ति के भाव को॥

हाथ की कुल्हाड़ी संकेत दे,, मोह के बन्धनों को काटना।
दूजे हाथ की रस्सी कहे,
अपने लक्ष्य को नजदीक राखना॥

आशीर्वाद का हाथ कहे, दया, धर्म और कल्याण करो।
हाथ में रखे मोदक जैसे
जीवन में श्रद्धा और विश्वास भरो॥

- **सोनल मंजू श्री ओमर जी, राजकोट (गुजरात)**

भारतीय परम्परा™

गणेशोत्सव क्यों मनाते है ?

गणेशोत्सव भगवान गणेश के आगमन की खुशी में मनाया जाता है। यह त्योहार उनके स्वागत, पूजा और भक्ति के साथ हमारे जीवन में शुभता और समृद्धि के प्रवेश का प्रतीक होता है। भगवान गणेश को विघ्नहर्ता, बुद्धि और नए आरंभ के देवता माना जाता है, इसलिए यह पर्व विशेष रूप से नई शुरुआतों के लिए अनुकूल माना जाता है। गणेशोत्सव के दौरान भक्ति और सामाजिक समरसता का सुंदर संगम देखने को मिलता है। यह पर्व न केवल धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक एकता को भी प्रोत्साहित करता है।

www पूरा पढ़ें

गणेश जी को "गणपति बाप्पा मोरया" क्यों कहते है ?

"गणपति बाप्पा मोरया" यह जयघोष भगवान गणेश के प्रति भक्तों के प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक है। "गणपति" का अर्थ होता है 'गणों के स्वामी', जो देवताओं में प्रथम पूज्य हैं, जबकि "बाप्पा" एक आत्मीय और स्नेहभरा संबोधन है, जो उन्हें अपने परिवार का हिस्सा जैसा बना देता है। "मोरया" शब्द संत मोरया गोसावी की भक्ति से जुड़ा है, जिनकी गणेश जी के प्रति गहरी श्रद्धा थी। यह पूरा संबोधन सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि भक्तों के गहरे भावनात्मक जुड़ाव और श्रद्धा की अभिव्यक्ति है। यह नारा भक्ति, उत्साह और सामूहिक ऊर्जा को जन्म देता है।

www पूरा पढ़ें

महालक्ष्मी

महालक्ष्मी व्रत एक पावन पर्व है, जिसे विशेष रूप से महिलाओं द्वारा अपने सुहाग की रक्षा और परिवार की सुख-समृद्धि के लिए मनाया जाता है। मान्यता है कि एक बार महालक्ष्मी ने असुरों का संहार कर महिलाओं के सौभाग्य की रक्षा की थी। तभी से उन्हें **"सुहागिन के सौभाग्य की देवी"** के रूप में पूजा जाता है। इस पर्व को महाराष्ट्र में "सावन यांच्या सौभाग्याची गौरी" के नाम से भी जाना जाता है, महिलाएं व्रत रखकर माँ महालक्ष्मी की विशेष पूजा करती हैं।

पूरा पढ़े www.

ऋषि पंचमी

ऋषि पंचमी भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है और यह सप्त ऋषियों को समर्पित पर्व है। यह व्रत मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा शुद्धि, संयम और ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए रखा जाता है। इस दिन सप्त ऋषियों – कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ –का पूजन कर उनके आशीर्वाद से सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना की जाती है।

पूरा पढ़े www.

राधा अष्टमी

राधाष्टमी देवी राधा के प्राकट्य दिवस के रूप में भाद्रपद शुक्ल अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। राधा रानी को भगवान श्रीकृष्ण की परा भक्ति और दिव्य प्रेम की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। इस दिन राधा जी का विशेष पूजन करते हैं, झूला झुलाते हैं और भजन-कीर्तन कर उनके प्रेममय स्वरूप का गुणगान करते हैं। वृंदावन, बरसाना और मथुरा जैसे तीर्थस्थलों में राधाष्टमी का विशेष महत्व है, जहाँ यह पर्व उल्लास और आस्था के साथ मनाया जाता है।

पूरा पढ़े www.

साधारणतया जब सन्त कहते हैं कि चातुर्मास में प्रभु विष्णु योग निद्रा में चले गये, जिसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वे सो गये हैं। इस तथ्य को समझने से पहले आप सभी के ध्याननार्थ एक चौपाई, जिसका गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में उल्लेख किया है -

"क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पञ्च तत्व रचि अधम शरीरा"

इसका अर्थ है : शरीर पाँच तत्वों (क्षिति - पृथ्वी, जल, पावक - अग्नि, गगन - आकाश, और समीरा - वायु) से बना है।

अब यहाँ यह जान लें कि बारिश के पूर्वानुमान से सम्बन्धित एक निम्न लोकोक्ति है जो हमारे सनातन पञ्चाङ्ग वाले आषाढ़ माह से जुड़ी हुयी है -
"वोरा आठौं भीगै कांकर, ग्यारस देव सोइये जाकर"

उपरोक्त लोकोक्ति स्पष्ट करती है कि **आषाढ़ के उजाले पखवाड़े की अष्टमी (वोरा आठौं) को बारिश होने पर कांकर (छोटे पत्थर या कंकड़) भीग जाते हैं,और एकादशी [ग्यारस] को देव सो जाते हैं, जिसका अर्थ है मांगलिक कार्यों का स्थगन ।**

अतः ऐसे समय में किसी भी प्रकार के सामाजिक [विवाह आदि] अथवा मांगलिक कार्य करने में अनेक तरह के संकटों से सामना [रूबरू] होना स्वाभाविक है। इसके अलावा हमारा शरीर भी तो इन पाँच तत्वों से मिलकर ही बना है, इसलिये जो प्रभाव बाहर है वही हमारे शरीर के अन्दर भी होंगे अर्थात अगर बाहर मन्दाग्नि है तो हमारे शरीर की भी अग्नि (पाचन क्षमता) कमजोर पड़ जाती है।

इन सभी का ध्यान रख हमारे पूर्वजों ने देवशयनी ग्यारस से लेकर देवउठनी ग्यारस (शरद ऋतु) तक को चातुर्मास का रूप देकर, देवता विश्राम काल मानते हुए,
........लम्बी यात्राओं, सामाजिक तथा विशेष मांगलिक कार्यक्रमों पर धार्मिक आवरण पहना कर रोक लगा दी ।

चूँकि हम सभी सनातनी शुरू से ही धर्मप्रधान समाज का हिस्सा रहे हैं अतः यह तथ्य हमने मन से स्वीकार कर लिया और अपने-अपने स्थान पर रहते हुए, व्यावसायिक कर्म के साथ व्यक्तिगत धार्मिक उपासना को प्राथमिकता दी।

गाँव-गाँव में, मन्दिरों-चौपालों पर सावन-भादौं माह में सामूहिक रूप से रामचरित मानस या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का वाचन करते हैं।

उपरोक्त सभी का ध्यान रखते हुये आज भी यह आवश्यक है कि हम सभी अपने धर्म का पालन करें। इन सोये हुए देवताओं अर्थात पृथ्वी, जल, अग्नि,आकाश और वायु से सहयोग करें। जिसका मतलब यही है कि हम इन पँचतत्वों की रक्षा का, इस समय कोई न कोई संकल्प लें। यही सनातनी विज्ञान है अर्थात हमारे सनातन में विज्ञान को भी, धर्म के आधार पर ही समझाया गया है। अतः यह विज्ञान से जुड़ा हुआ तथ्य है और जैसा हम सभी जानते हैं कि हमारे सनातन धर्म की सारी की सारी मान्यतायें आज के विज्ञान पर एकदम खरी उतरती हैं।

अन्त में यही आग्रह रहेगा - पौधे लगायें , पानी रोकें, नदियों, पहाड़ों, जलस्रोतों, जंगल की रक्षा करें।

- गोवर्द्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

गर्व है देश की बेटियों पर

विकट परिस्थिति में भी होसले बुलंद है, मेरा देश मेरी धरती को ये समर्पित है,
माँ भारती को नाज़ है हमारी बेटियों पर, जिसने सर ऊँचा कर दिया विश्व धरा पर,
दर्द दिल में है उनकी जिंदगी की कहानी सुन,
क्या कर्तव्य निभाया हमने इनकी उम्मीदों में,
पारिवारिक दर्द को सहकर सपना देखा है, मंज़िलो की दौड़ में अपना सब कुछ झोका है,
आन बान शान रखी देवेंद्र मेरे देशवासियों की,
देखो तिरंगा लहरा दिया है मेरे देश की शान में, देश की बेटियों की शिखरता को प्रणाम है।

- देवेंद्र बंसल जी, सामाजिक, विचारक व रचनाकार

IT'S TIME FOR CREATIVITY

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

WHY CHOOSE US

- Innovative Solutions
- Experienced Team
- Customized Strategies
- Proven Results

SERVICES

- Branding & Graphic Design
- Print Media Design
- Website & Ecommerce
- Digital Marketing
- Content Writing

8080518745 | www.mxcreativity.com | info@mxcreativity.com

73030 21123
www.bhartiyaparampara.com